जंगली जागरन

अप्रैल 2017

डबल रोड कटिंग

पंकज पाँगती

मुनस्यारी पहले एक बहुत बड़ा जंगल था। वहां पर तब पतली रोड थी। और मुनस्यारी में तब घर, बाज़ार और गांव छोटे छोटे थे। मुनस्यारी ने बहुत तरक्की की। इसलिए अब डबल रोड कटिंग हो रहा है। यह रोड बहुत नीचे धापा, पूँद्यों से हो रहा है। यह रोड मुनस्यारी की चौड़ाई तक हो रहा है। जब हम स्कूल जाते हैं तो मशीन से निकलते गंदे धुएँ और चलती गाड़ी, बाइक से निकलती गंदी मिट्टी हमारे मुँह पर लगती है। अब हम इसे पाउडर कहते हैं। मुनस्यारी से हरकोट जाने का रोड भी बना है। मुनस्यारी में मशीन रोड को बहुत अच्छा बना रही है। लेकिन जब बारिश आती है तो कटिंग के कारण स्कूल जाने में और घर आने में बहुत तकलीफ़ उठानी पड़ रही है। जैसे कि जब जाती गाड़ी पानी में से गुज़रती है तो पानी हमारे कपड़ों में लग जाता है। मुनस्यारी में जिन लोगों का घर रोड पर था वे लोग ऊपर ज़मीन ख़रीद कर फिर से घर बना रहे हैं। मशीनों से पेड़-पौधे और टेलेफ़ोन के तार, नल, टूट रहे हैं। टूटी टेलेफ़ोन की तार से लँगड़ाकर फिसलना आ रहा है और नल के पानी से कीचड़ हो रहा है। लोग ज़्यादा से ज़्यादा घर बना रहे हैं। घर बनाने के लिए पेड़-पौधे काट रहे हैं। ख़त्म कहानी।

हमारा गाँव सरमोली
पवन ठाकुनी

वैसे तो कहने के लिए सरमोली एक गाँव है, परंतु यहाँ शहरों से भी अधिक सूख सुविधाएँ उपलब्ध हैं। हिमालय की गोद में बसा यह स्थान अत्यंत सुंदर है। इस गाँव के चारों तरफ़ नदियाँ, विभिन्न प्रकार के पेड़ पौधे, जंगली जीव जंतु रहते हैं। सरमोली गाँव मुनस्यारी क्षेत्र में सबसे ऊँचे स्थान पर बसा होने के कारण यहाँ से कई दूर तक देखा जा सकता है।

सरमोली गाँव के लोग कठिन परिश्रम करके अपना जीवन चलाते हैं। लोग मवेशियों, बकरी, भेड़ों के साथ ऊपर जंगल में जाते हैं और वहीं एक झोंपड़ी बनाकर बैठते हैं और मवेशियों की अपने भालू, बाघ, आदि से रक्षा करते हैं। जितनी आसान पढ़ने में यह बात लगती है, उतनी है नहीं क्यूँकि लोग अत्यधिक वर्षा और बर्फ़ के मौसम में भी वहीं रहते हैं और कभी कभी तो भालू, बाघ उनकी झोंपड़ी में भी आ जाते हैं। अप्रैल और मई का महीना तो ऐसा लगता है जैसे सरमोली में एक त्यौहार सा छा गया हो क्यूँकि इन महीनों में सरमोली में पक्षी त्यौहार और अनेक प्रकार की गतिविधियाँ भी की जाती हैं।
और सरमोली में दूसरे गाँवों से लोग आते हैं और इन सब गतिवधियों का लाभ उठाते हैं। इसके साथ उन्हें अनेक प्रकार कि जानकारियाँ भी उपलब्ध होती हैं। तथा अंत में आते आते यहाँ वह दिन आ जाता है जिसका सभी को बेसब्री से इंतज़ार रहता है। वह दिन होता है मेसर कुंड का मेला जिसमें माटी संगठन की महिलाओं और गाँव के लोगों की मुख्य भूमिका रहती है। इस दिन मानो सभी के मन में उत्साह से भर जाता है।

राजा रानी की कहानी
नेहा सुमत्याल
तुमने तो राजा रानी की कहानी सुनी ही होगी। लेकिन एक ख़ासियत है इस राजा और रानी की। राजा एक हमारा सुंदर छोटा कुत्ता है और रानी हमारी बिल्ली। वह भी बहुत छोटी है। और सुंदर भी। लोग कहते हैं कि कुत्ता बिल्ली लड़ते हैं लेकिन मेरे बिल्ली- कुत्ता नहीं लड़ते। बल्कि वे तो खेलते हैं। और राजा रानी इन कुत्ता बिल्ली का नाम है।

हमारी रानी को राजा पसंद है और वह रात को राजा की गोद में सोती है। रानी को हर किसी की गोद में बैठना पसंद है और वह चूल्हे के पास बैठती है। उसे गरमी बहुत पसंद है। और उसे रोटी, पूरी, पराँठा, खीर, सब पसंद है।

राजा को तो रानी की पूँछ से खेलना पसंद है। राजा को रानी का कान चबाना बहुत पसंद है। और उसकी पूँछ। राजा को रोटी भी पसंद है। राजा को खेलना बहुत पसंद है और वह बहुत दौड़कर रानी के साथ खेलता है। रानी कभी कभी राजा से ग़ुस्सा हो जाती है क्यूँकि राजा रानी को बहुत तंग करता है। और राजा बड़े कुत्तों के साथ भी खेलता है।

नैना और पंकु
प्रिया रौतेला
नैना और पंकु हमारे जंगली स्कूल के साथी हैं और दोनो एक ही गाँव में रहते हैं। हम हर रविवार को जंगली स्कूल के पुस्तकालय में जाते हैं। एक दिन जब हम पुस्तकालय गए तो अचानक आसमान में काले काले बादल छाने लगे। तभी ज़ोर-शोर से बारिश शुरू हो गयी। और बारिश के साथ बिजली कड़कने लगी। तभी आसमान से बड़े बड़े काफ़ी विशाल ओले गिरने लगे। हम उस दिन पुस्तकालय में केवल पाँच लोग थे- नैना, मुन्नु, पंकु, शिबा दी और मैं। जैसे ही शिबा दी चाय बनाने गयी, नैना और पंकु की लड़ाई शुरू हो गयी। उनकी लड़ाई हमेशा बिना हाथ और लात के होती है। ये दोनो आपस में बहुत ही

ज़्यादा लड़ते हैं। गानों में एक दूसरे का नाम डाल कर जब यह दोनो लड़ते हैं तो लगता है मानो यह लोग अँताक्षरी खेल रहे हों। और एक दूसरे का बहुत ही मज़ाक़ बनाते हैं। दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते हैं तो कभी उनमें से एक को किसी अध्यापक से डाँट मिल गयी तो दोनों एक दूसरे की बात बताने को हमेशा ही आतुर रहते हैं। और वे बात इतने मज़े और हँसी से बताते हैं मानो बस इनकी एक दूसरे की बात ही सुनते रहो और ख़ुद का ध्यान उन्ही को दो। वैसे उनकी लड़ाइयाँ भी हमेशा ही होती रहेंगी क्यूँकि ये दोनो एक दूसरे से लड़ना नहीं छोड़ेंगे और न ही मैं लिखना छोड़ूँगी।

जोहार क्लब मुन्स्यारी -फ़ुटबाल जूनियर वर्ग

राहुल सुमत्याल

सर्व प्रथम मैच मुन्स्यारी बोय्ज़ वर्सेस थाना बैंड के बीच हुआ। इस मैच को खेलने में बहुत आनंद आया। मैच शुरू होने के कुछ क्षणों बाद ही बारिश प्रारम्भ हुई। हमने विरोधी टीम को बहुत टक्कर दी। अत: हम तीन गोलों से हार गए। फिर हमारे टीम मैनेजर हिमांशु रावत ने ओबजेक्शन उठाया जिस कारण थाना बैंड की टीम बाहर हो गयी। फिर हमारा दूसरा मैच घोरपट्टा हीरोज़ के साथ हुआ। मैच काफ़ी संघर्ष का हुआ और फिर हमें एक पेनल्टी मिला। उस पेनल्टी से हमें एक गोल की बढ़त मिली। कुछ क्षणों के बाद उन्हें भी एक पेनल्टी मिला पर हमारे गोलची ने बॉल को रोक दिया। इसके कुछ क्षणों बाद उन्हें एक बहुत पास फ़्री किक मिली। उस फ़्री किक से विरोधी टीम ने गोल बराबर कर दिए। फिर पेनल्टी हुआ जिसमें दोनो टीम को पाँच शॉट मारना था जिसमें हमारी टीम ने गोल का बढ़त बना लिया था। इसी कारण हमने विरोधी टीम को हरा दिया। फिर हमारा मैच वी वी म ई काँ के साथ हुआ। इनकी टीम के साथ बहुत बड़ा टक्कर हुआ। पहले हमने एक गोल डाला। फिर विरोधी टीम ने भी गोल डाला। फिर हमने एक गोल और डाला। फिर उन्होंने भी एक गोल और डाला। फिर हमें एक फ़्री किक मिला जो गोल से बहुत दूर पर था। फिर मैंने चेंज मारा। फिर हमारी टीम के एक खिलाड़ी ने गोल डाल दिया। इसी कारण हम जीत गए। फिर हमारा अगला मैच मदकोट के साथ होना था। उनकी टीम में एक दो फ़र्ज़ी निकले। इसी कारण हमें जीता ठहरा दिया गया। फिर हमारा सरमोली के साथ मैच होना था लेकिन उसमें भी फ़र्ज़ी निकल गए, जिस कारण हमे फिर जीता ठहरा दिया गया। हम फ़ाइनल में पहुँचे तो हमारा मैच मुनस्यारी पब्लिक स्कूल के साथ हुआ। पहले कुछ क्षणों तक हमारा बहुत ज़्यादा टक्कर हुआ पर उन्होंने दो गोल डाल कर हमें हरा दिया। मैं इस टूर्नामेंट से बहुत कुछ सीखा।

मेरा गाँव

पंकज पाँगती

मेरे गाँव का नाम सेनर है। मेरा गाँव बहुत ही अच्छा है। मेरे गाँव में 12-13 के क़रीब घर हैं। या उससे भी कम हो सकते हैं। हमारे गाँव में एक बड़ा मंदिर है जहाँ हम हर साल पूजा करते हैं। हमारे गाँव में खेती कम किया जाता है। हमारे गाँव के बच्चे पढ़ने के लिए दरकोट जाते हैं। हमारे गाँव में एक प्राइमरी स्कूल था जो अभी नहीं है। हमारे गाँव में एक बड़े पत्थर के वहाँ से एक नदी गुज़रती है। वो बहुत बड़ा नदी है जो रोड के नीचे से बहती है। वह पुल लम्बा है। उस पुल से नीचे देखने में खाई जैसा लगता है।

आज कल हमारे गाँव के रोड के ऊपर बाढ़ आया था। रोड के ऊपर पेड़ पौधे बाढ़ से बह गए हैं और हमारे गाँव में भी बाढ़ आने से प्राइमरी स्कूल टूट गया है। और हमारे गाँव के ऊपर

एक छोटा ही गाँव है। वह गाड़ के पीछे है। यहाँ भी बिजली पहुँच जाती है। इस गाँव में बड़ी अच्छी खेती होती है। मेरे गाँव से धार ही धार दिखते हैं। मेरे गाँव में बहुत बड़ा जंगल है।

इस कहानी को मैं यहीं पर ख़त्म करता हूँ। धन्यवाद

आग की कहानी

महिमा रौतेला

मैं इस कहानी मैं यह बताना चाहती हूँ कि आग और सभी जगह आग लग रही है। यहाँ का मौसम भी कुछ ऐसा ही है। घास फूस जल्दी आग पकड़ रही है। सभी जगह आग लग रही है और मौसम सूखा है। आसमान साफ़ होने के बावजूद भी धुआँदार है और जगह जगह आग लगाए जा रहे हैं। गाँव वालों का यह मानना है कि फ़सलों को काटने के बाद खेतों- पहाड़ों में आग लगा दी जाए तो दूसरी बार अच्छी फ़सलें उगेंगी और उसमें अलग-अलग प्रकार के फ़सल उगाने के लिए अच्छी मिट्टी जली हुई राख में अच्छी फ़सलें पैदावर होगी। पर लोग यह नहीं देख रहे हैं कि आग लगने से कितना प्रदूषण हो रहा है। मुनस्यारी जैसे बर्फ़ीले इलाक़े में प्रदूषण के वजह से गरमी बढ़ रही है और हिमखंड पिघल रहे हैं और पानी के स्त्रोत सूख रहे हैं और लोग जगह जगह गन्दगी- प्लास्टिक फेंक रहे हैं। नदियों में तो कुछ ज़्यादा लोग कूड़ा फेंक रहे हैं, सोच रहे हैं कि बरसात आएगी और पानी के साथ गन्दगी बह जाएगी।

मेरा कहानी भी ऐसा ही है। हमारे गाँव के पास ही में शंखधुरा नाम का एक गाँव है। वहाँ भी किसी ने पहाड़ों पर आग लगा दी थी और जब मैं रात में सोयी थी तो हमारी खिड़की से कुछ लाल चमक रहा था। फिर वह आग इतना ज़्यादा फैल गया कि इतने बड़े आग की लपटें पहाड़ी पर फैल रहे थे। तभी गाँव वाले रात में आग को बुझाने गए। पर वह आग भुजने का नाम ही नहीं लेता। चाहे जितना पानी डालो वह उतना ही फैल जाता। गाँव वालों ने सोचा कि हमें यह आग हर हालत में भुजाना ही है। किसी के तो घास फूस के बंडल जंगल में रखे थे और ऊपर वाले गाँव के लोगों का घर जलने का डर था। दिन ब दिन आग बढ़ती जा रही थी। यह आग के जलने का चौथा दिन चल रहा था तभी आसमान पर काले बादल छाए और बादल गर्जने लगे और बारिश शुरू हुआ। बारिश को देखकर गाँव वाले ख़ुश हुए और दूसरे दिन देखा तो आग बुझ गयी और हम भी ख़ुश हुए। फिर हम जंगल गए तो हमने कुछ अजीब देखा। कि जंगल की हालत बहुत ख़राब है। सभी पेड़ पौधे जले हुए थे और जंगली जानवर जले हुए मिले थे। जगह जगह पर कीड़े मकोड़े मरे थे। हमने चूहे, बीटलों और जंगली मुर्ग़ियों को रास्ते भर मरा हुआ देखा। जंगली जानवरों के घर उजड़ गए थे। पक्षियों के घोंसले जल गए थे। सारी जगह राख ही राख थी। और मरे हुए जानवरों के लाश थे। तब हमें बहुत बुरा लगा। और हमने निर्णय किया कि हम पेड़ पौधे उगाएँगे और शांति बनाएँगे।

फिर बरसात आयी। मौसम परिवर्तन हुआ और फिर हरियाली छायी।

मेरी कार

लक्ष्य रौतेला

मुझे एक गत्ते का छोटा सा टुकड़ा मिला। मैंने चार ढक्कन इकट्ठा किए थे। मैंने बहुत सोचा कि इनका क्या किया जाए। उसके बाद मैं दो कील घर के औज़ार रखने वाली जगह से ढूँढ लाया। फिर मैंने दो ढक्कनों में छेद किया और उनमें कील घुसाया। अब मैंने उन्हें गत्ते में घुसाया। अब बारी थी बाक़ी बचे ढक्कनों में छेद होने की। लेकिन छेद करते समय एक ढक्कन शहीद हो गया। और मुझे बहुत दुःख हुआ।फिर मैंने दूसरा ढक्कन ढूँढा। फिर छेद किया और कील की दूसरी तरफ़ घुसाया। लो- मेरी कार तैयार।

पियूड़ की कहानी

लक्ष्य रौतेला

एक महीने की बात है। हमारी बिल्ली एक पियूड़ को लाई थी। तब बिल्ली भागते भागते गिरी। पियूड़ छिप गया। तभी ममी ने पियूड़ ढूँढा। बिल्ली ने पियूड़ को घायल कर दिया था। पैर में

हल्दी लगा दी। दूसरे दिन तिल्लु मामा और मैंने उसे जंगल पहुँचा दिया।

मेसर कुंड श्रमदान

प्रिया रौतेला

हमेशा जब मेसर कुंड का मेला होता है हम सब लोग मेसर कुंड मे तथा वहा के मैदान के चारों ओर मंच में जो घास उगे होते हैं उनमे से चुभने वाली घास को अलग कर देते है।मेसर कुंड की सफाई करने मे बहुत मजा आता है। कुंड के अंदर कहीं पर पानी ठंडी होती है तो कहीं बीच मे गुनगुनी पानी होता है तो हमें वहा पर जाने मे बहुत मजा आता है। पहले तो हम कुंड की सफाई करते है फिर बाद मे जहां पर सफाई की गई हो वहां पर तैरते हैं जो की बहुत रोमांचक होता है।

कभी-कभी तो हम जो तालाब मे उगे पौधे होते हैं तो उसी से एक-दुसरे को मारने का खेल करते हैं जिसमें एक-दुसरे को मारने मे मज़ा आता है। हम सभी लोग घर से हमेशा ज्यादा कपड़ा पहन के लेते हैं तांकि वहां पर जब हमारा कपड़ा भीग जाए तो हम वह खोले हुए कपड़े पहन सकें।

जब हमारे कपड़े तालाब के पानी से भीग जाते है तो हम आग जला कर उसमे अपने कपड़ों को सुखाते है।फिर चाय पीते हैं और उसके साथ बिस्कीट खाते हैं और अगर किसी ने अपने लिए खाना घर से पैक कर के लाया होता है तो हम सभी लोग एक गोल घेरे मे साथ बैठकर खाना खाते हैं और जब साथ बैठकर खाना खाते हैं तो खाना खाने में मजा आता है और खाने का स्वाद बढ़ जाता है। खाना खाने के बाद अगर कोई जूस लेके आया होता है तो सभी लोग जूस पीते हैं या थोड़ी देर तक आराम करते है फिर थोड़ी देर तक मेसर कुंड के मैदान मे खेलते हैं। फिर घर की ओर आते हैं बस युंही खेलते-कूदते दौड़ते-भागते।

ख़ुराफ़ाती नल

शिबा डेसोर

आँगन में लगा एक नल भी कितना ख़ुराफ़ाती हो सकता है? जब पहली बार मैं उस नल के पास गयी तो सिर्फ़ धीरे धीरे एक एक बूँद ही टपक रहा था। ऊपर किसी और ने पानी खोला होगा। बस थोड़ा इंतज़ार करो और पानी आजाएगा। मैं भी उसकी टप टप देखकर अपने ख़यालों में खो कर इंतज़ार ही कर रही थी जब बिना चेतावनी के भड़ाम से नल ने पानी की उलटी कर दी और मैं पूरा भीग गयी। तब मुझे पता चला कि यह नल घूमता तो है लेकिन इसमें से निकलते पानी की गति पर कोई रोक़धाम नहीं हो सकती।

जल्द ही मुझे वह नल बहुत अच्छा लगने लगा। मुझे समझ आया कि वह ख़ुराफ़ाती, तुनकमिजाजी या मनमौजी नहीं है। सिर्फ़ असली है। वो क्या करेगा हम उसका अन्दाज़ नहीं लगा सकते थे लेकिन हम यह अन्दाज़ तो लगा सकते थे के हम कोई अन्दाज़ नहीं लगा सकते। एक तरह से वह मेरा शिक्षक बना। उसने मुझे सबर सिखाया क्यूँकि उसकी गति और बहाव पर मेरा कोई नियंत्रण ही नहीं था। और थोड़ी बहुत सूझ-भूझ भी सिखायी क्यूँकि धीरे धीरे समझ आया कि अगर नल का उपयोग करना है तो सबसे अच्छा तरीक़ा है कि उस पर एक पाइप डालो और पाइप को एक लोहे की बाल्टी के हैंडल के बीच में फँसा दो तांकि वह ज़्यादा हिल ना पाए। और फिर थोड़ा हँसना भी सिखाया क्यूँकि चाहे अपनी तरफ़ से कितना भी ध्यान से नल को खोलो, वह फिर भी कभी अपने आप निर्णय ले लेता था कि मुझे नहाए हुए काफ़ी समय हो गया है और एक बार फिर नहला देता। हाँ अभी भी कभी कभी नल पर ग़ुस्सा तो आता है लेकिन यह भी समझ आगया है कि मनमौजी वह नल नहीं बल्कि मैं ही हूँ।

साहसी औरत

महिमा रौतेला

एक बार की बात है। बरसात का समय था। जगह जगह लम्बी लम्बी घासें झाड़ियाँ थीं। गाँव के लोग रोज़ जंगल जाते थे। एक दिन बहुत लोगों ने जंगल में भालू को देखा और गाँव में सारे लोगों को यह ख़बर बता दी और गाँव वालों ने सोचा कि ये सभी लोग अपने फ़ायदे के लिए झूठ बोल रहे हैं। दूसरे दिन सभी लोग अपनी गाय भैंसों को जंगल छोड़ने चले गए और वह घर वापस आए और बोले वहाँ तो हमने कोई भालू नहीं देखा। जब वह बहुत समय बाद जंगल गए तो वहाँ कोई भी गाय भैंस नहीं बची थी। गायों व भैंसों की हड्डीयाँ थी और उनका बहुत नुक़सान हुआ और वे सोचने लगे काश हमने इनकी बात मान ली होती।

तभी एक औरत अकेले जंगल जा रही थी। उसे बहुत सारे लोगों ने कहा कि तुम अकेले जंगल मत जाओ पर वह नहीं मानी। उसकी गाय भूख से बीमार थी। गाय के नीचे बिछाने के लिए पतेला भी नहीं था और उसका बच्चा होने वाला था। गाय के

लिए अपनी जान को दाव पर लगाकर वह जंगल पहुँची। वहाँ उसे भालू के पाँव के निशान भी दिखायी दिए पर फिर भी वह जंगल गयी। पूरा जंगल सुनसान था। अचानक झाड़ियों की आवाज़ें आयीं और उसने देखा कि वहाँ एक छोटा सा बंदर है। कुछ ही देर बाद वह फिर घास

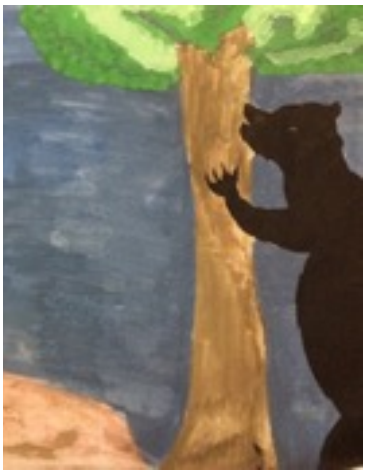

काटने चली गयी और वह पीछे मुड़ी और अचानक उसे पीछे से भालू ने झपट्टा मारा और औरत को लहूलहान कर दिया। फिर भी उस औरत ने हार नहीं मानी और उसने भालू को एक डंडे से मारा। भालू को ग़ुस्सा आया और उसने एक बार और अपने नौकीले पंजों से उसके मुँह में मारा। औरत ने हार नहीं मानी। उसके हाथ में एक तेज़ धार वाली धातुली थी। उसने भालू के नाक पर ज़ोर से मारा और भालू रोते रोते वापस चला गया। औरत ख़ून से लथपथ, घास घर लेकर आयी और उसने घास गाय को दी और वह बेहोश हो गयी। तभी उसे गाँव वाले अस्पताल ले गए।
कुछ महीनों बाद वह ठीक हो गयी। उसकी गाय की गाँव वालों ने देखभाल की, उसका बच्चा हुआ और वह भी ठीक हो गयी।

लेखक-लेखिकाओं के बारे में-

पंकज (पंकु)- बहुत मज़ाक़िया है। ढोलक बजाता है। कितना भी चोट लगा हो लेकिन रोता नहीं है। दो डिम्पल हैं। नैना और मुन्नु के साथ दिन रात लड़ाई चलती है।

प्रिया- ताक़तवर है। अलग अलग शौक़ हैं। कभी गिटार, तो कभी फूटबाल, कभी बोकसिंग, तो कभी फ़ोटोग्राफ़ी। ग़ुस्सा लेट में आता है और लेट में जाता भी है। घूमना अच्छा लगता है।

नेहा (नैना)- दूसरों के बालों की चोटी बनाती है। सभी कुत्ता-बिल्ली उसके दोस्त हैं। बोलने में हिचकिचाती है पर जब शुरू हो जाए तो अंत नहीं आता।

महिमा (मुन्नु)- ग़ुस्सा जल्दी आता है, जल्दी जाता है। नाचना पसंद है। प्रेत- आत्मा की ऐक्टिंग करती है। दौड़ना पसंद है।

लक्ष्य- जो सोच ले उसे पूरा करता है। जानवर पसंद हैं। बड़ा दिल है। दोस्ती जल्दी करता है। लड़ाई में बहुत तेज़ है।

राहुल-शर्मीला है लेकिन पीठ पीछे बहुत उछलता है। फ़ुटबाल के बारे में दीवाना है। घर के काम में बहुत मदद करता है।

पवन- फ़ुटबाल की धुन सवार है। फ़िल्में देखने का बहुत शौक़ है। होशियार है और आलसी भी।

अल्का-पेंटिंग, डाँस और गाने में बहुत अच्छी है। चोकलेट इतना पसंद है कि दूसरों का भी खा लेती है। पूरा घर सम्भाल सकती है। फ़ोटोग्राफ़ी में दिलचस्पी रखती है।

शिबा- डाँस करना बहुत पसंद है। रास्ता जल्दी भूल जाती है। हँसती रहती है। शब्दों को तोड़ कर नया शब्द बनाने की धुन सवार है।

पत्रिका के चित्रकार- अल्का रौतेला

पत्रिका कैसी लगी बताएँ - प्रिया रौतेला, c/o रेखा रौतेला, जंगली स्कूल, ग्राम सरमोली, पोस्ट मुनस्यारी, 262554, पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड

जंगली स्कूल के सदस्य